Mahendra's

UP POLICE कांस्टेबल/ UP लेखपाल

HINDI

अलंकार

भाग–3

LIVE 03:00 PM

अलंकार-

अलंकार का शाब्दिक अर्थ है-सजावट,श्रृंगार, आभूषण।

काव्यशास्त्र में अलंकार शब्द का प्रयोग काव्य सौन्दर्य के लिए होता है, अर्थात् काव्य रूपी काया की शोभा बढ़ाने वाले अवयव को अलंकार कहते हैं।

जिस प्रकार आभूषण शरीर की शोभा बढ़ाते हैं, उसी प्रकार काव्य में प्रयुक्त होने वाले अलंकार शब्दों एवं अर्थों की सुन्दरता में वृद्धि करके चमत्कार उत्पन्न करते हैं।

अलंकार के भेद–अलंकार के मुख्यतः दो भेद हैं

1.शब्दालंकार– जहाँ शब्दों के कारण काव्य के सौन्दर्य में चमत्कार आ जाता है, वहाँ शब्दालंकार होता है।

2.अर्थालंकार- जहाँ पर अर्थ कारण काव्य के सौन्दर्य में वृद्धि होती है अर्थात् चमत्कार आ जाता है, उसे अर्थालंकार कहते हैं।

अपवाद - जहाँ शब्द और अर्थ दोनों में ही विशेषता आ जाने से सौन्दर्य या चमत्कार उत्पन्न हो, वहाँ **'उभयालंकार'** होता है।

1.शब्दालंकार–

जहाँ शब्दों के कारण काव्य के सौन्दर्य में चमत्कार आ जाता है, वहाँ शब्दालंकार होता है।

- शब्दालंकार के भेद हैं -

(i) अनुप्रास अलंकार
(ii) यमक अलंकार
(iii) श्लेष अलंकार

(1)अनुप्रास अलंकार-

जहाँ पर एक ही वर्ण की बार-बार आवृत्ति हो, चाहे उनके स्वर मिले या न मिलें, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण:कान कानन कुंडल मोरपखा पै बनमान विराजति है

यहाँ पर कान, कानन, कुंडल में 'क' वर्ण की आवृत्ति तीन बार हुई है। अत: अनुप्रास अलंकार है।

सामान्यतः अनुप्रास अलंकार के 5 माने हैं गए

(1) छेकानुप्रास
(2) वृत्यानुप्रास
(3) श्रुत्यानुप्रास
(4) लाटानुप्रास
(5) अन्त्यानुप्रास

(1) छेकानुप्रास–

जहाँ एक व्यंजन वर्ण अथवा अनेक व्यंजन वर्ण की आवृत्ति केवल एक बार होती है।

उदाहरण –

- विविध सरोज सरोवर फूले। (स)
- घोर घाम हिम बाहर सुखारी (घ)
- वर दंत की पंगति कुंद कली('क')

- अमिय भूरिमय चूरन चारु।

समन सकल भवरुज परिवार॥ ('च' तथा 'स')

- रसवती रसना करके कही। (र ,क)
- कथित थी कथनीय गुणावली। (क, थ)

(2)वृत्त्यनुप्रास – जहाँ एक अथवा अनेक व्यंजन वर्णों की आवृत्ति एक से अधिक बार हो।

उदाहरण –

- तरणि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये।
- प्रतिभट कटक कँटीले केते काटि-काटि,
- कालिका-सी किलकि कलेऊ देति काल को।
- सो सुख सुजस सुलभ मोहि स्वामी ।
- मुदित महीपति मन्दिर आये।

  सेवक सचिव सुमन्त बुलाये।।

(3) श्रुत्यानुप्रास- जहाँ कण्ठ, तालु आदि एक स्थान से बोले जाने वाले वर्णों की आवृत्ति होती है।

उदाहरण:

- तुलसीदास सीदत निसिदिन देखत तुम्हार निठुराई ।

इसमें दन्त्य वर्णों त, ल, स, न, र की आवृत्ति हुई है। इसलिए श्रुत्यानुप्रास अलंकार है।

(4) लाटानुप्रास :

जहाँ एक शब्द अथवा वाक्यखण्ड की उसी अर्थ में आवृत्ति हो किन्तु तात्पर्य अथवा अन्वय में भेद हो।

पूत सपूत तो का धन सञ्चय ।
पूत कपूत तो का धन सञ्चय ॥

मात्र सपूत और कपूत शब्द की भिन्नता के आधार पर पूर्ण वाक्य अथवा वाक्य-खण्ड एक होते हुए भी भिन्नार्थक का द्योतक हो गया है।

सुपुत्र के लिए धन-सञ्चय की आवश्यकता नहीं क्योंकि वह अर्जन की क्षमता रखता है।

दूसरी ओर, कुपुत्र के लिए धन सञ्चय का कोई महत्त्व नहीं क्योंकि अपने अविवेक से वह उस धन को अविलम्ब ही समाप्त कर देगा।

(5)अन्त्यानुप्रास-

जहाँ चरण या पद के अन्त में स्वर या व्यंजन की समानता होती है, वहाँ अन्त्यानुप्रास होता है।

उदाहरण-

गुरु पद रज मृदु मंजुल अंजन।
नयन अमिय दृग दोष विभंजन।

यहाँ दोनों पंक्तियों के अन्त में 'जन' व्यंजन की समानता है अतः अन्त्यानुप्रास है।

2.यमक अलंकार-

जहाँ एक शब्द की आवृत्ति दो अथवा दो से अधिक बार होती है किन्तु उनके अर्थ में भिन्नता होती है, वहाँ यमक अलङ्कार होता है।

कनक कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय।
या खाए बौरात नर या पाए बौराय।।

प्रथम कनक का अर्थ 'सोना' और दूसरे कनक का अर्थ- धतूरा है।

(2)माला फेरत जग गया, फिरा न मन का फेर।
कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर ।

- पद्य में मनका शब्द का दो बार प्रयोग किया गया है।
- पहली बार 'मनका' का आशय माला के मोती से है,
- दूसरी बार 'मनका' से आशय है मन की भावनाओं से

(3) काली घटा का घमंड घटा ।

3.श्लेष अलंकार-

श्लेष का शाब्दिक अर्थ है, चिपकना अथवा चिपका हुआ। किसी वाक्य में प्रयुक्त एक शब्द अथवा अनेक शब्दों में दो अथवा इससे अधिक अर्थों का सम्पृक्त होना श्लेष कहलाता है।

माया महाठगिनी हम जानी।
तिरगुन फाँस लिए कर डोलै, बोलै मधुरी बानी ॥

यहाँ तिरगुन शब्द में शब्द-श्लेष की योजना है। इसके 2 अर्थ हैं-

(i) तीन गुण-सत्त्व - (सत), रजस् (रज) और तमस् (तम)।

(ii) तीन भागों वाली रस्सी।

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे, मोती, मानुस, चून।।

यहाँ दूसरी पंक्ति में 'पानी' श्लिष्ट शब्द है, जो प्रसंग के अनुसार तीन अर्थ दे रहा है।

मोती के अर्थ में – चमक
मनुष्य के अर्थ में – प्रतिष्ठा और
चूने के अर्थ में – जल

मंगन को देख पट देत बार-बार है।

इस काव्य-पंक्ति में 'पट' के दो अर्थ हैं-

वस्त्र और किवाड़।

पहला अर्थ है-वह व्यक्ति किसी याचक को देखकर उसे बार-बार 'वस्त्र' देता है और दूसरा अर्थ है-वह व्यक्ति याचक को देखते ही दरवाजा बंद कर लेता है।

1.अनुप्रास अलंकार के कितने भेद हैं -

(a)3

(b)4

(c)5

(d)6

अनुप्रास अलंकार-

जहाँ पर एक ही वर्ण की बार-बार आवृत्ति हो, चाहे उनके स्वर मिले या न मिलें, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

कान कानन कुंडल मोरपखा पै बनमान विराजति है

यहाँ पर कान, कानन, कुंडल में 'क' वर्ण की आवृत्ति तीन बार हुई है। अत: अनुप्रास अलंकार है।

सामान्यतः अनुप्रास अलंकार के 5 माने हैं गए

(1) छेकानुप्रास
(2) वृत्यानुप्रास
(3) श्रुत्यानुप्रास
(4) लाटानुप्रास
(5) अन्त्यानुप्रास

2. “विविध सरोज सरोवर फूले”- में अलंकार का भेद हैं –

(1) छेकानुप्रास

(2) वृत्यानुप्रास

(3) श्रुत्यानुप्रास

(4) लाटानुप्रास

छेकानुप्रास–

जहाँ एक व्यंजन वर्ण अथवा अनेक व्यंजन वर्ण की आवृत्ति केवल एक बार होती है।

उदाहरण –

- विविध सरोज सरोवर फूले। (स)
- घोर घाम हिम बाहर सुखारी (घ)

3. मुदित महीपति मन्दिर आये। सेवक सचिव सुमन्त बुलाये॥ में अलंकार का भेद हैं –

(1) छेकानुप्रास

(2) वृत्यानुप्रास

(3) श्रुत्यानुप्रास

(4) लाटानुप्रास

वृत्त्यनुप्रास –

जहाँ एक अथवा अनेक व्यंजन वर्णों की आवृत्ति एक से अधिक बार हो।

- तरणि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये।
- मुदित महीपति मन्दिर आये।
  सेवक सचिव सुमन्त बुलाये।।

4. जहाँ कण्ठ, तालु आदि एक स्थान से बोले जाने वाले वर्णों की आवृत्ति होती है।

(1) छेकानुप्रास

(2) वृत्यानुप्रास

(3) श्रुत्यानुप्रास

(4) लाटानुप्रास

श्रुत्यानुप्रास- जहाँ कण्ठ, तालु आदि एक स्थान से बोले जाने वाले वर्णों की आवृत्ति होती है।

उदाहरण:

- तुलसीदास सीदत निसिदिन देखत तुम्हार निठुराई ।

इसमें दन्त्य वर्णों त, ल, स, न, र की आवृत्ति हुई है। इसलिए श्रुत्यानुप्रास अलंकार है।

5.पूत सपूत तो का धन सञ्चय ।
पूत कपूत तो का धन सञ्चय ॥
में अलंकार का भेद हैं –

(1) छेकानुप्रास

(2) वृत्यानुप्रास

(3) श्रुत्यानुप्रास

(4) लाटानुप्रास

लाटानुप्रास :

जहाँ एक शब्द अथवा वाक्यखण्ड की उसी अर्थ में आवृत्ति हो किन्तु तात्पर्य अथवा अन्वय में भेद हो।

पूत सपूत तो का धन सञ्चय ।
पूत कपूत तो का धन सञ्चय ॥

सुपुत्र के लिए धन-सञ्चय की आवश्यकता नहीं क्योंकि वह अर्जन की क्षमता रखता है।

दूसरी ओर, कुपुत्र के लिए धन सञ्चय का कोई महत्त्व नहीं क्योंकि अपने अविवेक से वह उस धन को अविलम्ब ही समाप्त कर देगा।

6. गुरु पद रज मृदु मंजुल अंजन।
नयन अमिय दृग दोष विभंजन। में अलंकार का भेद हैं –

(1) छेकानुप्रास

(2) वृत्यानुप्रास

(3) श्रुत्यानुप्रास

(4) अन्त्यानुप्रास

अन्त्यानुप्रास-

जहाँ चरण या पद के अन्त में स्वर या व्यंजन की समानता होती है, वहाँ अन्त्यानुप्रास होता है।

उदाहरण-

गुरु पद रज मृदु मंजुल अंजन।
नयन अमिय दृग दोष विभंजन।

यहाँ दोनों पंक्तियों के अन्त में 'जन' व्यंजन की समानता है अतः अन्त्यानुप्रास है।

7. जहाँ एक शब्द की आवृत्ति दो अथवा दो से अधिक बार होती है किन्तु उनके अर्थ में भिन्नता होती है, वहाँ अलङ्कार होता है –

(1) छेकानुप्रास अलंकार

(2) श्लेष अलंकार

(3) अनुप्रास अलंकार

(4) यमक अलंकार

यमक अलंकार-

जहाँ एक शब्द की आवृत्ति दो अथवा दो से अधिक बार होती है किन्तु उनके अर्थ में भिन्नता होती है, वहाँ यमक अलंकार होता है।

कनक कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय।
या खाए बौरात नर या पाए बौराय।।

प्रथम कनक का अर्थ 'सोना' और दूसरे कनक का अर्थ-धतूरा है।

2.अर्थालंकार-

जहाँ अर्थ के कारण काव्य में रमणीयता आती है वहाँ अर्थालंकार होता है।

दूसरे शब्दों में-जब शब्द की अपेक्षा अर्थ का अलंकार अधिक हो तब है।

1.उपमा अलंकार

समान धर्म, स्वभाव, शोभा, गुण आदि के आधार पर जहाँ एक वस्तु की तुलना दूसरी वस्तु से की जाती है, वहाँ उपमा अलंकार होता है।

उपमा अलंकार के चार अंग हैं :

(i) उपमेय (प्रस्तुत) : जिसकी उपमा दी जाए।

(ii) उपमान (अप्रस्तुत) : जिससे उपमा दी जाए।

(iii) समानतावाचक शब्द: जिमि, इव, सा, से , सी, ज्यों, जैसे, सम, समान ,सद्रश, सरिस आदि।

(iv) समान धर्म (साधारण धर्म) : उपमान और उपमेय के बीच, जो बात समान रूप से पायी जाती है, उसे 'समान धर्म' कहते हैं।

उदाहरण के लिए,
राम का मुख कमल के समान सुन्दर है।

राम का मुख - उपमेय
कमल - उपमान
के समान - समानतावचाक शब्द
सुन्दर - समानधर्म

स्वभाव, शोभा, गुण आदि के आधार पर जहाँ एक वस्तु की तुलना दूसरी वस्तु से की जाती है, वहाँ उपमा अलङ्कार होता है।

अन्य उदाहरण-

- हाय फूल-सी कोमल बच्ची हुई राख की थी ढेरी।
- यह देखिए, अरविंद से शिशुवृंद कैसे सो रहे।
- तब तो बहता समय शिला सा जम जाएगा।
- कमल सा कोमल गात सुहाना।
- हरिपद कोमल कमल से।
- पीपर पात सरिस मन डोला

उक्त सभी पंक्तियों में वाचक शब्द सा, से, सी, सम, सरिस, आदि के प्रयोग द्वारा उपमेय में

उपमान की समानता व्यक्त की गई है।

2.उत्प्रेक्षा अलंकार-

जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना व्यक्त की जाय वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

संभावना व्यक्ति करने के लिए जनु, जानो, जनहुँ, मनु, मानो, मनहुँ, जौं, त्यों,जैसे-आदि शब्दों का प्रयोग देखने को मिलता है।

- कहती हुई यों उत्तरा के नेत्र जल से भर गए।
- सिर फट गया उसका वहीं मानो अरुण का रंग का घड़ा।

3.रूपक अलंकार

जहाँ उपमेय में उपमान की अत्याधिक समानता के कारण उपमान का उपमेय में अभेद आरोपण कर दिया जाता है।
अर्थात् उपमेय और उपमान में कोई भेद प्रकट नहीं जाता,वहाँ अलंकार होता है। प्राय: रूपक अलंकार में उपमेय और उपमान के बीच योजक चिह्न (-)पाया जाता है।

उदाहरण

मैंया मैं तो चंद्र-खिलौनालैहों।
चरण-कमल बन्दौं हरि राई।

4.भ्रांतिमान अलंकार-

जब किसी पद में किसी सादृश्य विशेष के कारण उपमेय (जिसकी तुलना की जाए) में उपमान (जिससे तुलना की जाए) का भ्रम उत्पन्न हो जाता है तो वहाँ भ्रांतिमान अलंकार माना जाता है।
कहने का तात्पर्य यह है कि जब किसी पदार्थ को देखकर हम उसे उसके समान गुणों या विशेषताओं वाले किसी अन्य पदार्थ (उपमान) के रूप में मान लेते हैं तो वहाँ भ्रांतिमान अलंकार माना जाता है। जब उपमेय को भूल से उपमान समझ लिया जाए।

जैसे –
अँधेरे में किसी ’रस्सी’ को देखकर उसे ’साँप’ समझ लेना भ्रांतिमान अलंकार है

ओस बिन्दु चुग रही हंसिनी मोती उनको जान।’’
ओस की बूँदों को मोती समझकर चुग रही हैं,

’जानि स्याम को स्याम-घन नाचि उठे वन मोर।’
श्यामल वर्ण होने के कारण मयूरों को श्यामल (काले) रंग के मेघों का भ्रम हो गया।

5.सन्देह अलंकार-

रूप-रंग, आदि के सादृश्य से जहां उपमेय में उपमान का संशय बना रहे या उपमेय के लिए दिए गए उपमानों में संशय रहे, वहाँ सन्देह अलंकार होता है।

जब उपमेय और उपमान में समता देखकर यह निश्चय नहीं हो पाता कि उपमान वास्तव में उपमेय है या नहीं। जब यह दुविधा बनती है, तब संदेह अलंकार होता है अथार्त जहाँ पर किसी व्यक्ति या वस्तु को देखकर संशय बना रहे वहीं संदेह अलंकार होता है।

1.सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है।
सारी ही की नारी है कि नारी ही की सारी है।

6.अतिशयोक्ति –

जहाँ उपमेय का वर्णन बहुत बढ़ा-चढ़ाकर अर्थात् लोक-सीमा से अधिक
बढ़ाकर किया जाए, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

- आगे नदिया पड़ी अपार । घोड़ा कैसे उतरे पार ।
  राणा ने सोचा इस पार। तब तक चेतक था उस पार।

- पानी परात को हाथ छुओ नहीं।
  नैनन के जल सौं पग धोए॥

- हनुमान की पूँछ में लगन न पाई आग,
  लंका सिगरी जल गई गए निसाचर भाग ।

(7) अन्योक्ति-

जहाँ उपमान (अप्रस्तुत) के वर्णन के माध्यम से उपमेय (प्रस्तुत) का वर्णन किया जाए, वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है। इसे अप्रस्तुत प्रशंसा भी कहा जाता है।
अन्योक्ति अलंकार

माली आवत देखकर कलियाँ करिहैं पुकार,
फूलि फूलि चुनि लियो काल्ह हमारी बार।

इन पंक्तियों में माली, कलियाँ, फूल आदि उपमान शब्दों का प्रयोग करते हुए क्रमशः-
यमराज,जीवित व्यक्ति और मृत व्यक्ति का वर्णन किया गया है।

(8) मानवीकरण अलंकार-

जहाँ जड़ प्रकृति पर मानवीय भावनाओं तथा क्रियाओं का आरोप हो, वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है।

- आए महत बसंत

इस पंक्ति में बसंत ऋतु की आने की सुंदरता की तुलना महतों के आने से किया गया है।

- मेघ आए बड़े बन-उन के सँवर के।

इस पंक्ति में मेघों के उमड़ने का वर्णन मानव के सजने संवरने की तुलना के साथ किया

1. कनक कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय।
या खाए बौरात नर या पाए बौराय।।

(A) श्लेष

(B) यमक

(C) उपमा

(D) रूपक

2."चारु चंद्र की चंचल किरणें खेल रही थीं जल थल से
इस पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार है:

(A) उपमा

(B) उत्प्रेक्षा

(C) रूपक

(D) अनुप्रास

3.काव्य को आभूषित करने वाले उपकरण को क्या कहते हैं?

(A) रस

(B) अलंकार

(C) छंद

(D) संधि

4.'कमलनयन' में कौन-सा अलंकार है?

(A) रूपक

(B) अनुप्रास

(C) उपमा

(D) संदेह

5.अनुप्रास अलंकार किसका उदाहरण है?

(A) शब्दालंकार का

(B) अर्थालंकार का

(C) उभयालंकार का

(D) इन सभी का

6. जहाँ उपमेय में उपनाम का आरोप किया जाता है, वहाँ कौन-सा अलंकार होता है?

(A) अनुप्रास

(B) रूपक

(C) उपमा

(D) यमक

7.एक वर्ण का अक्षर की आवृति एक अधिक बार किस अलंकार में होती है?

(A) रूपक

(B) उपमा

(C) यमक

(D) अनुप्रास

8.कविता में जहाँ शब्दगत तथा अर्थगत दोनों ही प्रकार का चमत्कार है, वहाँ अलंकार का कौन-सा। भेद होता है?

(A) शब्दालंकार

(B) अर्थालंकार

(C) उभयालंकार

(D) ये सभी

९.सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है।
सारी ही की नारी है कि नारी ही की सारी है।

में अलंकार का कौन-सा भेद होता है?

(A) संदेह अलंकार का

(B) अर्थालंकार का

(C) उभयालंकार का

(D) इन सभी का

10.“पीपर पात सरिस मन डोला”
में अलंकार का कौन-सा भेद होता है?

(A) रूपक

(B) उपमा

(C) यमक

(D) अनुप्रास

11. चारु चंद्र की चंचल किरणे
में अलंकार का कौन-सा भेद होता है?

(A) उपमा

(B) रूपक

(C) यमक

(D) अनुप्रास

12. हरिपद कोमल कमल से। इन पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?

(A)रूपक

(B) उपमा

(C) उत्प्रेक्षा

(D) प्रतीप

13. तीन बेर खातीं, ते वे तीन बेर खाती हैं।

इन पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?

(A) श्लेष

(B) यमक

(C) उत्प्रेक्षा

(D) उपमा

वक्रोक्ति अलंकार-

‘वक्रोक्ति’ का अर्थ है ‘वक्र उक्ति’ अर्थात ‘टेढ़ी उक्ति’।
कहनेवाले का अर्थ कुछ होता है, किन्तु सुननेवाला उससे कुछ दूसरा ही अभिप्राय निकाल लेता है।

जिस शब्द से कहने वाले व्यक्ति के कथन का अभिप्रेत अर्थ ग्रहण न कर श्रोता अन्य ही कल्पित या चमत्कारपूर्ण अर्थ लगाये और उसका उत्तर दे, उसे वक्रोक्ति कहते हैं।

वक्रोक्ति में चार बातों का होना आवश्यक है-

(क) वक्ता की एक उक्ति।

(ख) उक्ति का अभिप्रेत अर्थ होना चाहिए।

(ग) श्रोता उसका कोई दूसरा अर्थ लगाये।

(घ) श्रोता अपने लगाये अर्थ को प्रकट करे।

रुद्रट ने इसे शब्दालंकार के रूप में स्वीकार कर इसके दो भेद किये है-

(1) श्लेष वक्रोक्ति अलंकार
(2) काकु वक्रोक्ति अलंकार

(1)श्लेष वक्रोक्ति अलंकार-

एक कबूतर देख हाथ में पूछा, कहाँ अपर है ?
उसने कहा, अपर कैसा ? वह तो उड़ गया सपर है।।

नूरजहाँ से जहाँगीर ने पूछा कि 'अपर' अर्थात दूसरा कबूतर कहाँ है ?
नूरजहाँ ने 'अपर' का अर्थ लगाया- 'पर (पंख) से हीन' और उत्तर दिया कि वह पर-हीन नहीं था, बल्कि परवाला था, इसलिए तो उड़ गया।

यहाँ वक्ता के अभिप्राय से बिल्कुल भित्र अभिप्राय श्रोता के उत्तर में है।

(2)काकु वक्रोक्ति अलंकार-

कण्ठध्वनि की विशेषता से अन्य अर्थ कल्पित हो जाना ही काकु वक्रोक्ति है।

यहाँ अर्थपरिवर्तन मात्र कण्ठध्वनि के कारण होता है, शब्द के कारण नहीं।

अतः यह अर्थालंकार है। किन्तु मम्मट ने इसे कथन-शौली के कारण शब्दालंकार माना है।

जैसे :-

कह अंगद सलज्ज जग माहीं। रावण तोहि समान कोउ नाहीं।
कह कपि धर्मसीलता तोरी। हमहुँ सुनी कृत परतिय चोरी।।

मैं सुकुमारि नाथ बन जोगू।

धन्यवाद